तर्ज- जिनके सपने हमें रोज आते रहे

जिनके सजदों में झुकता हमारा ये सर,चरणों में बसर
वो ही रामरतन(जागनी रतन) सतगुरू हो तुम्हीं
जिनके दर्शन से सब सुख मिलने लगे,दुख मिटने लगे
वो ही...

1- नाजनीं जलवे आपके बिखरे यहां
और इश्क के नगमें बजते यहां
जिनके नगमों पे रुह लहराने लगी,गुनगुनाने लगी

2- बेपनाह मुहब्बत दी आपने
बेपनाह इनायत की आपने
अर्श से उतरे हैं बादशाह मेरे,शहनशाह मेरे

3- दुनियां वालों को दुनियां के रतन मिले
हमको तो हकीकी रतन मिले
सब रतनों से न्यारा मेरा रतन,ले जाये वतन

4- जिस गुलशन को महकाया था आपने
उसमें रंग भरे हैं सरकार ने
सींचा अमृत से आपने हर फूल को,रहते सनकूल हो

Nijanand App